पिरी मूंजानी हलया, आऊं कीं चुआं जिभ्याय रे।
सजण वेर न बिसरे, मूंके लगा तरारी जा घाय रे।। १० ।।

मेरा दूल्हा चला गया। मैं कैसे इस जुबान से कहूं? धनी का एक वचन भी नहीं भूलता। यह मुझे तलवार के घाव की तरह लगे हैं।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। २०७ ।।

खुई सा परडेहडो, जित सांगाए न्हाए सिपरी।
पिरी पुकारेनी हलया, मूंजी माया मत बेई फिरी।। १ ।।

आग लगे इस परदेश (माया के ब्रह्माण्ड) में जहां पर प्रीतम की पहचान नहीं है। प्रीतम पुकार कर चले गए और मेरी बुद्धि माया में लगी रही।

मूंजो जीव वढे कोरा करे, महें मिठो पाताऊं।
सजण संदो सूर ईं मारे, मंझा जीव करे रे धाऊं।। २ ।।

अब मैं अपने जीव को काट-काटकर टुकड़े करूं और उसमें नमक डालूं। इस तरह प्रीतम के दुःख के कारण मरूं। जीव अन्दर बैठा रोए-चिल्लाए।

जेरोनी लगो जर उथई, जीव कर करे मंझ।
वलहे संदोनी विरह ईं मारे, मूंके डिंनाऊं डूरण डंझ।। ३ ।।

आग लगी, लपटें उठीं। जीव (विरह में) जल रहा है। प्रीतम के विरह से जीव को इस तरह से मारूं क्योंकि इसने मुझे कठोर दुःख दिया है।

मूं पिरियन से जा केई, अदी एडी न करे व्यो कोए।
सजण आया मूं कारण, आऊं अंख न खणियां तोए।। ४ ।।

हे सखी! मैंने प्रीतम से जो किया, वैसा हे सखी! कोई दूसरा नहीं करता। प्रीतम मेरे वास्ते आए। मैंने आंख उठाकर देखा ही नहीं।

कीं करियां आऊं गालडी, मथां उखणियां की मोंह।
मूं हथां एहेडी थेई, खल लाहियां चोटी नोंह।। ५ ।।

अब मैं कैसे बात करूं? अपने मुंह को कैसे उठाऊं? मेरे हाथ से ऐसा हुआ कि चमड़ी को नाखून से उधेड़ दूं।

तरारे गिंनी तन ताछियां, हडे करियां भोर।
पेहेलेनी खल उबती लाहियां, जीव कढां ईं जोर।। ६ ।।

तलवार लेकर तन को छील डालूं और हड्डियों का पाउडर बनाऊं (पीस डालूं)। पहले खाल उलटी उधेड़ूं और इस प्रकार से जीव को तड़पा-तड़पा कर निकालूं।

भाले तरारी कटारिएं, मूंके वढे बिधाऊं झूक।
मूं अंग मूंहीं डुझण थेयां, जीव करे रे मंझ कूक।। ७ ।।

भाला से, तलवार से, कटार से काट-काटकर इस तन के टुकड़े कर डालूं। मेरा तन ही मेरा दुश्मन हो गया है। जीव इसके अन्दर बैठा चिल्ला रहा है।

Nijanand App

सजण सुजाणी करे, कडे समी सई न कीयम गाल रे।
ए डुख आंऊं कीं झलींदी, मूंजा केहा हांणे हवाल रे।। ८ ।।

प्रीतम की पहचान करने पर भी कभी सामने बातें नहीं कीं। इस दुःख को मैं कैसे झेलूंगी? अब मेरी क्या हालत होगी?

सूर तोहेजा घणूज सुहामणां, जे तो डिंना रे डंझ।
सूरेनी घणूं सुखाईस, पेई पचारे हाणें मंझ।। ९ ।।

हे प्रीतम! आपका यह दुःख सुहावना लगता है, जो आपने मुझे दिया है। आपका यह दुःख बहुत सुख देने वाला है। इसके बीच मैं पड़ी हूं।

सूर तोहेजा हेडा सुखाला, त तो सुखें हूंदो केहेडो सुख।
पण मूं न सुजातां मूजा सिपरी, आऊं झूरां तेहेजे डुख।। १० ।।

हे प्रीतम! आपका दुःख इतना सुखदाई है तो आपके सुख में कितना सुख होगा, परन्तु मैंने अपने प्रीतम की पहचान नहीं की। उसके दुःख में मैं कलपती हूं।

अंग मूहीं जे अडाए तरारी, झूक करे करियां झोरो।
घोरे बंजां आंजी डिस मथां, त को लाईम सजणे थोरो।। ११ ।।

मैं अपने तन के तलवार से टुकड़े करूं। अग्नि में झोंक दूं और बलिहारी जाऊं (कुरबान जाऊं)। उस दशा में फिर भी प्रीतम के लिए यह थोड़ा है।

हडेनी करियां अंगीठडी, मूजो माहनी होमियां मंझ।
नारियर हंदे ल्हाय रखां मथां, मूंके तोहे न भजेरे डंझ।। १२ ।।

हड्डियों की अंगीठी बनाऊं जिसमें अपने मांस को होम कर दूं। नारियल के स्थान पर मैं अपने सिर की बलि दूं, तो भी मेरा दुःख नहीं जाता।

जरो जरो मूंजे जीव संदो, मूंके विरह पाताऊं वढ।
इंद्रावती चोए चेताय, मूंके माया मंझानी कढ।। १३ ।।

अपने जीव के छोटे-छोटे टुकड़े करके विरह की अग्नि में जला दूं। श्री इन्द्रावतीजी सावधान होकर कहती हैं, हे धनी! मुझे इस तरह की माया से निकालो।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। २२० ।।

चौपाई प्रगटाणी

हवे एक लवो जो सांभरे सही, तो जीव रहे केम काया ग्रही।
सांभलो साथ कहूं विचार, चूक्या अवसर आपण आणी वार।। १ ।।

अब यदि जीव एक शब्द को विचार करे तो इस तन में नहीं रह सकता। हे मेरे सुन्दरसाथ! मैं विचार कर तुमसे कहती हूं कि निश्चय ही हम इस बार भूल कर बैठे हैं।

ए आपण खमीने रह्या, त्यारे वली धणीजीए कीधी दया।
बाई रतनबाईनी वासना, श्री लीलबाईने उदर उपना।। २ ।।

यह हमने सहन कर लिया। इसलिए धनी ने हमारे ऊपर फिर से कृपा की है। लीलबाईजी के उदर से उत्पन्न बिहारीजी रतनबाई की वासना है।

Nijanand App